अर्थशास्त्र - बी॰ए॰ - पार्ट - II (आनर्स)
सोगरा कालेज, बिहारशरीफ

बेरोज़गारी की प्रकृति एवं प्रकार -

जब किसी देश में कार्य करने वाली जनशक्ति अधिक होती है और काम करने के लिये राजी होते हुये भी लोगों को प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता, तो ऐसी अवस्था को बेरोज़गारी की संज्ञा दी जाती है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा आज जरूरतें पूरी होने का पैमाना देश के नागरिकों की आर्थिक स्थिति को माना जाता है। इसीलिये प्रति व्यक्ति आय को देश की खुशहाली का पैमाना मान लेने का चलन है, लेकिन इसमें एक विसंगति है। प्रति व्यक्ति आय देश की कुल आय को देश की आबादी से भाग देकर निकलती है। यानी यह अंदेशा बना रहता है कि कहीं आर्थिक विषमता की स्थिति तो नहीं है।

अर्थशास्त्रियों का मानना है कि किसी भी अच्छी अर्थव्यवस्था में चार प्रतिशत से अधिक बेरोज़गारी ठीक नहीं होती। देश में बेरोज़गारी लगातार बढ़ रही है। शिक्षित बेरोज़गारों की संख्या भी करोड़ो में पहुँच चुकी है।

तीन दशक पहले नव-उदारवादी आर्थिक नीतियाँ लागू होने से पहले तक देश में सकल रोज़गार में सरकारी नौकरियों का हिस्सा दो प्रतिशत होता था, लेकिन उदारवादी आर्थिक नीतियों के बाद विभिन्न क्षेत्रों के निजीकरण के चलते रोज़गार के अवसर लगातार कम होते जारहे हैं। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या सभी बेरोज़गार युवाओं को रोज़गार मुहैया कराना केवल सरकार की ज़िम्मेदारी है?
सरकार अकेले ही सारे रोज़गार पैदा नहीं कर सकती, इसीलिये उद्यमिता की भावना को बढ़ाने के लिये

Scanned by CamScanner

स्टैंडअप, ~~स्टार्टअप~~ स्टार्टअप इंडिया और मुद्रा योजनाओं पर अमल किया जा रहा है, फिर भी वर्तमान में सरकार के पास रोज़गार के बेहद सीमित अवसर हैं। निजी क्षेत्र कम श्रम में काम चलाना चाहता है और वहीं निवेश करता है जहाँ उसे लाभ होता दिखाई देता है। दूसरी ओर गाँवों में परंपरागत और पैतृक व्यवसायों का खत्म होना भी चिंता की बात है क्योंकि पढ़े - लिखे युवाओं को इन व्यवसायों में अब कोई संभावना नहीं दिखती।

जब तक देश के सभी युवाओं को उनकी योग्यता और आवश्यकता के अनुसार काम नहीं मिलता तब तक एक स्वच्छ, सुखी और उन्नत देश के निर्माण की कल्पना करना बेमानी है।

बेरोज़गारी के प्रमुख प्रकार

संरचनात्मक बेरोज़गारी → संस्चनात्मक बेरोज़गारी अर्थव्यवस्था में होने वाले संरचनात्मक बदलाव के कारण उत्पन्न होती है।

अल्प बेरोज़गारी → अल्प बेरोज़गारी वह होती है जिसमें कोई व्यक्ति जितना समय काम कर सकता है उससे कम समय वह काम करता है अर्थात् काम के सामान्य घंटों से कम काम मिलता है।

पूर्ण बेरोज़गारी → इसमें व्यक्ति काम करना चाहता है और उसमें काम करने की आवश्यक योग्यता भी होती है, लेकिन उसे काम नहीं मिलता और वह पूरा समय बेकार रहता है।

मौसमी बेरोज़गारी → इसमें किसी व्यक्ति को वर्ष के केवल कुछ ही महीनों में काम मिलता है। भारत में कृषि क्षेत्र

Scanned by CamScanner

में यह बेहद आम है क्योंकि बुआई तथा कटाई के मौसम में अधिक लोगों को काम मिल जाता है, लेकिन शेष वर्ष बेकार रहते हैं।

चक्रीय बेरोज़गारी ⇒ ऐसी बेरोज़गारी तब उत्पन्न होती है जब अर्थव्यवस्था में चक्रीय उतार-चढ़ाव आते हैं। आर्थिक तेज़ी-मंदी पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ हैं। आर्थिक तेज़ी की अवस्था में रोज़गार की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।

Scanned by CamScanner